त्याग, वैराग्य और भक्ति का सरल मार्ग : श्रीमद्भागवत का दिव्य संदेश

डॉ. मुकेश नायक

वेद, पुराण और उपनिषद सदा से त्याग की महिमा का गान करते आए हैं. शास्त्रों का स्पष्ट मत है कि त्याग के बिना ज्ञान का उदय नहीं होता. जब तक मनुष्य विषय-वासनाओं, मोह, अहंकार और आसक्ति से ऊपर नहीं उठता, तब तक आत्मज्ञान का प्रकाश उसके अंत:करण में प्रकट नहीं होता. इसीलिए कहा गया है कि ज्ञान का आधार वैराग्य है.

उपनिषदों में कहा गया है—

त्यागेनैके अमृतत्वमानशु: ॥

अर्थात केवल त्याग के द्वारा ही अमृतत्व अर्थात परम पद की प्राप्ति होती है.

परंतु यह मार्ग अत्यंत कठिन है. साधारण मनुष्य जो गुटखा, तंबाकू, लोभ, क्रोध और छोटी-छोटी आदतें नहीं छोड़ पाता, वह संसार के गहरे मोह को कैसे त्यागे? मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह और मत्सर के बंधनों में जकड़ा हुआ है. ऐसे जनों के लिए भगवान ने कृपा कर सरलतम मार्ग प्रदान किया— भक्ति का मार्ग.

यही कारण है कि श्रीमद्भागवत पुराण में अत्यंत मधुर, सहज और रसपूर्ण साधना का उपदेश मिलता है. इसमें न घर छोड़ने की आवश्यकता है, न परिवार त्यागने की, न खेत-खलिहान छोड़ने की, न व्यापार बंद करने की, और न ही वन-आश्रम जाने की अनिवार्यता है.

भागवत कहता है—संसार में रहो, अपना कर्तव्य निभाओ, परंतु हृदय में भगवान को धारण करो.

गृहेष्वाविशतां चापि पुंसां कुशलकर्मणाम्.
मद्वार्तायातयामानां न ते गृहा: मता: ॥

अर्थात जो गृहस्थ अपने घर में रहते हुए भी भगवान की कथा, स्मरण और सेवा में रत रहते हैं, उनके घर बंधन नहीं कहलाते.

ब्रज की गोपियाँ इसका सर्वोत्तम उदाहरण हैं. उन्होंने घर नहीं छोड़ा, अपने स्वधर्म का त्याग नहीं किया, वन में तपस्या नहीं की, योगाभ्यास नहीं किया, फिर भी उन्हें भगवान श्रीकृष्ण का प्रत्यक्ष साक्षात्कार हुआ.

गोपियाँ यही मानती थीं कि श्रीकृष्ण सदैव उनके साथ हैं. उनके लिए कृष्ण कोई दूर बैठे ईश्वर नहीं, अपितु जीवन का श्वास थे. वे रसोई में हों, गौशाला में हों, यमुना तट पर हों या घर के कार्यों में—हर क्षण कृष्ण ही उनके हृदय में बसे थे.

इसी प्रेम की महिमा देखकर भगवान के परम ज्ञानी भक्त उद्धव जी भी दंग रह गए. जब वे वृंदावन ज्ञान का उपदेश देने पहुँचे, तब उन्होंने देखा कि यहाँ ज्ञान नहीं, प्रेम बोलता है. यहाँ तर्क नहीं, समर्पण है. यहाँ शास्त्र नहीं, श्याम का स्मरण है.

गोपियों के चरणों की धूलि पाकर उद्धव जी ने कहा—

वन्दे नन्दव्रजस्त्रीणां पादरेणुमभीक्ष्णश:.
यासां हरिकथोद्गीतं पुनाति भुवनत्रयम् ॥

अर्थात मैं नंदबाबा के ब्रज की उन गोपियों की चरण-रज को बार-बार प्रणाम करता हूँ, जिनके मुख से निकली हरिकथा तीनों लोकों को पवित्र कर देती है.

यहाँ उद्धव का ज्ञान भी प्रेम के सामने नतमस्तक हो गया. गोपियों ने सिद्ध कर दिया कि ईश्वर तक पहुँचने के लिए कठिन तपस्या से अधिक आवश्यक है निर्मल हृदय और निष्कपट प्रेम.

श्रीमद्भागवत का संदेश है—

नायं जनो मे सुखदु:खहेतुर्न देवतात्मा ग्रहकर्मकाला:.
मन: परं कारणमामनन्ति संसारचक्रं परिवर्तयेद्यत् ॥

अर्थात मनुष्य के सुख-दु:ख का कारण बाहर की वस्तुएँ नहीं, उसका मन ही है.

यदि मन संसार में अटका है तो वन में जाकर भी बंधन रहेगा. यदि मन भगवान में लगा है तो गृहस्थ जीवन भी मोक्ष का द्वार बन जाएगा.

घर में रहना पाप नहीं, परंतु घर को मन में रखना पाप है. धन रखना दोष नहीं, पर धन को हृदय में रखना दोष है. परिवार रखना बंधन नहीं, पर परिवार में ईश्वर को भूल जाना बंधन है.

इसलिए भागवत कहता है—

स वै पुंसां परो धर्मो यतो भक्तिरधोक्षजे.
अहैतुकी अप्रतिहता ययात्मा सुप्रसीदति ॥

अर्थात मनुष्य का सर्वोच्च धर्म वही है जिससे भगवान में निष्काम और निरंतर भक्ति उत्पन्न हो. ऐसी भक्ति से आत्मा पूर्ण प्रसन्न हो जाती है.

अत: जीवन का सार यही है—कर्तव्य करो, व्यवहार करो, संसार में रहो, पर हृदय सिंहासन पर परमात्मा को बैठाओ.

जब मन में कृष्ण बस जाते हैं, तब घर मंदिर बन जाता है, कार्य पूजा बन जाता है, और जीवन मोक्ष का मार्ग बन जाता है.

क्लास by बड़े भाई

कहीं आपकी संगति आपको भटका तो नहीं रही..

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई,कभी एक किस्सा सुना था कि देवराज इन्द्र एक ऋषि की तपस्या से भयभीत हो गए. उन्हें यह डर सताने लगा कि कहीं यह ऋषि अपने तप से हमारा सिंहासन न जीत लें. तब इस डर से वह ऋषि की तपस्या भंग करने का उपाय सोचने लगे और उन्हें एक उपाय सूझ गया. वो ऋषि के आश्रम में गए उन्हें प्रणाम किया. ऋषि ने देवराज का यथोचित सत्कार किया. इसके बाद देवराज ने ऋषि को एक तलवार दिखाई और ऋषि से पूछा कि क्या वह इसे कुछ दिन तक अपने पास रख लेंगे.. क्योंकि वह एक यात्रा ने निकले हैं और तब तक इस महत्वपूर्ण तलवार को रखने के लिए ऋषि से विश्वसनीय कोई नही हो सकता. ऋषि को देवराज से अपने लिए यह प्रशंसा सुनकर प्रसन्नता भी हुई. उन्होंने सहर्ष उस तलवार को रख कर देवराज इन्द्र को यह कहकर निश्चिंत किया वह अपना भ्रमण पूरा करके आएं. उनकी तलवार सुरक्षित रहेगी.

देवराज वह तलवार सौंपकर चले गए. इधर ऋषि आश्रम में देवराज इन्द्र की तलवार सुरक्षित रखकर तपस्या करने लगे. कुछ समय में उनके मन में आया कि क्यों न इंद्र की तलवार थोड़ी देखी जाए. उन्होंने पहले दिन तलवार देखी. कुछ दिन बाद उसे उठाकर देखा. फिर कुछ दिन बाद थोड़ा चलाकर देखा. उन्हें अच्छा लगने लगा उनका तपस्या से ध्यान बंटने लगा और कुछ ही समय में उनकी तपस्या भंग हो गई. और इस तरह इन्द्र का उद्देश्य पूरा हो गया.

छोटे भाई कहानी का संदेश समझ आ गया होगा. देवराज ने उन तपस्वी को एक तलवार की संगति देकर उनकी तपस्या भंग कर दी. इसी तरह हम भी जाने अनजाने किसी गलत संगति के चंगुल ने फंस जाते हैं जो हमें समझ ही नहीं आती कि वो हमें किस तरह लक्ष्य से भटका रही है. हमें अच्छा लग रहा होता है. इसलिए छोटे भाई अपनी संगति के प्रति सतर्क रहिए. जो आपको भटकाए उससे दूर हो जाइए.

हमारे पूर्वजों ने भी तो कहा है

जैसी संगति वैसी बुद्धि.

बस यही कहना था. धन्यवाद.

व्यंग्य

संपादक जी सुन लो

मेघा राठी

कहते हैं महान विचार अचानक ही जन्म लेते हैं. इस बात पर सौ फीसदी यकीन हमें तब हुआ जब हम टीवी के सामने बैठे 'अलाने - फलाने ' चैनल पर किलों भर मेकअप थोप कर बैठी एंकर को निहारते हुए उसका कार्यक्रम देख रहे थे... हाँ जी , देख हो रहे थे क्योंकि सुनने लायक तो कुछ था ही नहीं... वही बड़े -बड़े लोग और समाज ,जनता, देश की चिंता में आधे उड़े उनके बाल और बुलंद आवाज में दुनिया के नक्शे पर भारत को बुलंद बनाने की उनकी दलीलें.

हम तो बस इंतजार कर रहे थे कि कब हमारी प्लेट में पत्नी जी गरमा गरम पकोड़े रखेंगी जिनको बहुत देर से रसोई में कान पर मोबाइल लगा कर तला जा रहा था. उनके वार्तालाप के मध्य विधान डालने का अर्थ होता टीवी पर चल रही बुलंद आवाज से भी बुलंद भाषण का आरंभ हो जाना और उसके बाद बेमौसम की बरसात का घिर आना...जिसका खामियाजा हमारे बेचारे हल्के से बटुए को उठाना पड़ता और रसोई का भार हमारे नाजुक कंधों पर आ जाता इसलिए प्रतीक्षा की इन घड़ियों में शांति से टीवी में विराजमान एंकर को देखने से बेहतर और कोई उपाय नहीं लगा.

हम आमंत्रित अतिथियों के उच्च विचारों को सुन ही रहे थे कि अचानक हमारे मस्तिष्क में बिजली से कौंध गई. मन में ख्याल आया कि एक दिन दुनिया से सबको जाना है तो क्यों न कुछ ऐसा करके जाया जाए कि लोग हमें भी याद करें लेकिन कैसे ?....बहुत सोचने पर भी अपने अंदर कोई खूबी याद नहीं आई और जितनी बार कोशिश की , हर बार पत्नी जी की आवाज आकाशवाणी की तरह गूंज जाती, न जाने मेरे बाप ने तुम्हारे अंदर क्या देखा जो तुम्हारे पल्ले बांध दिया ! किसी काम के नहीं तुम, निठल्ले हो.

बार- बार की आकाशवाणी को सुनकर आखिरकार हमारे अंदर का मरियल सा अहम अकड़ कर सिर उठाने लगा और सोचने लगा कि ऐसा क्या किया जाय जिससे प्रसिद्ध हों और खर्चा भी न हो क्योकि सुना था कि फेमस होने की कीमत भी देनी पड़ती है.

कुछ हजार रुपये बैंक अकाउंट में थे वह भी बीवी के साथ जॉइंट अकाउंट, ... एक घड़ी, एक शादी के समय मिली अंगूठी, जिसका उलाहना आज भी बीवी देती रहती है और इकलौती पत्नी के साथ दो चंगू- मंगू, कुल मिलाकर यही जमा पूंजी है जिससे कोई परोपकार का अभूतपूर्व कार्य तो नही हो सकता.... बहुत सारे घोड़े- गधे दौड़ाने के बाद अचानक ख्याल आया कि साहित्यकार बना जाय और ऐसा लिख डाले कि प्रेमचंद, प्रसाद , अज्ञेय की तरह लोग हमें भी याद करें. लेकिन क्या लिखा जाए.....यह सब सोचते-सोचते लिखा-

कूद रही थी बत्तख
और दो चूजे पीछे.
पिल्ले भूखे खड़े,
मां के पीछे घूमें.
हाय ला दो रोटी कोई
और दे दो पानी
बत्तख को,
कूद रही है फुदक- फुदक
बत्तख भी कैसे.

दो बार पढ़कर अपने एक रचनाकार मित्र को राय देने के लिए कविता व्हाट्सअप कर दी. काफी देर इंतजार के बाद मित्र का जबाब एक सिर पीटते इमोजी के साथ आया और तुरन्त ही फोन भी , अमाँ मियाँ, क्या लिखे हो ये ?

कविता लिखे हैं, पढा नहीं क्या? भाई मेरे ये कोई कविता है क्या ?अरे दर्द होना चाहिए तब जाकर कविता लिखी जाती है. अब दर्द कैसे लाएं सोच ही रहे थे कि आवाज आई खाली बैठे क्या करते रहते हो.बरतनों का टोकरा लटकाने के लिए कील ठीक दो. चुपचाप हथौड़ा लेकर कील लगाने के लिए मारा पर ये क्या....उफ्फफ यह क्या-- दर्द की लहर के साथ हमें आसमान में तारे नजर आने लगे.

मिल गया दर्द, कहकर बस मित्र की सलाह पर अमल करते हुए बैठ गए और कविता लिखनी शुरू कर दी--

कील चुभी हाथ में खून भी बह रहा है
दर्द को देख कलेजा मुँह आ रहा है
कील पे हथौड़ा आशना हुआ
मगर कील ने मुँह फेर लिया
दर्द बहुत गहरा है प्रभु कुछ उपाय करो .
टीस पर मेरी कुछ तो रहम करो .

इस बार कविता मित्र को न भेज कर कुछ अखबारों को मेल की और फेसबुक पर अपने फोन नम्बर के साथ सन्देश डाल दिया- कविता छापने के इच्छुक संपादक संपर्क करें.

कई संपादकों के फोन आये व बहुतों ने अपने नंबर भेजे. किताब छापने की राशि सुनकर तो हमारे हाथ के तोते उड़ गए.पर्स को देखा तो 500-500 के तीन नोट मुँह चिढा रहे थे. सभी के संदेश जांच परख कर, सोच - समझ कर एक नंबर मिलाया.

खनकदार आवाज में किसी लड़की ने हैलो कहा. धड़कते दिल से हमने भी हैलो किया. हैलो - हाय के आदान- प्रदान के बाद हमने अपनी बात रखी तो सुमधुर आवाज में लड़की बोली -सर! 5000 रुपये तो लगेंगे ही तभी आपकी कुछ रचनायें छप पाएंगी.

राशि सुनकर हमारे सपने कमजोर होने लगे. थूक गटकते हुए हमने उसे ' सोचकर बताते हैं ' कहा और सच में सोच में पड़ गए.

रात्रि में भी यह सब सोचते-सोचते हम सो गए.सपने में देखा कि हमारी रचनाओं की प्रसिद्धि आसमान छू रही है.लम्बी-लम्बी कतारों में संपादक गण लाईन लगा कर खड़े हैं.यहाँ तक की राष्ट्रपति ट्रम्प तक ने हमारी तारीफ की है.हमें सम्मान मिल रहा है.तालियाँ बज रही हैं.जोर की कर्कश आवाज से नींद खुली तो देखा पत्नी जी हाथ में झाड़ू उठायें खड़ी थी जब देखो सोते रहते हो.

हड़बड़ाए से उठे ही थे कि एक संपादक महोदय का फोन आया कि आपकी रचना पढ़ी. हम अपनी खुशी का इजहार करते उससे पहले ही वे बौखलाए से बोले कि क्या लिखा है यह, मेरी समझ में नहीं आ रहा कि अपने सर के बाल नोचूँ या दीवार पे सिर मार लूं. आइंदा ऐसी कोई रचना मत भेजना .

यह सुनकर तो मुंगेरी लाल के सारे सपने बिखर कर चूर हो गए. किसी तरह उनकी अनुनय विनय की. प्लीज सम्पादक जी रचना छपवा दीजिये कैसे भी.

आखिरकार वह पसीज गए, देखो मैं तो इसे नहीं छाप सकता लेकिन एक नम्बर देता हूँ, उस पर बात कर लो,लेकिन कुछ खर्च होगा.

हमने देर न करते हुए तुरन्त उस नम्बर पर बात की. छपना इज्जत का प्रश्न बन गया था. मैंने अपना बजट उन्हें बताया, सौदेबाजी करते - करते आखिरकार एक हजार रुपए में हमारी मात्र एक किताब छापने का मामला पट गया.

फिर क्या था , एक महीने के अन्दर हमने पत्नी से छिपा कर बैंक से पैसे निकलवा कर अपनी तीन किताबे संपादक महोदय के सहयोग से छपवा लीं. अब हमारा नाम भी लेखकों में गिना जा रहा था.

विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमो के आमंत्रण आने आरम्भ हो गए थे और तो और इस बार चंगू - मंगू के स्कूल के वार्षिकोत्सव के लिए प्रिंसीपल साहिबा खुद घर पे आकर मुस्कुरा के हमे मुख्य अतिथि बनने का निवेदन भी कर गई हैं.और हम.....हम अब भी नई- नई कविताएं लिख रहे हैं और सम्पादकों के पास भेज कर कह रहे हैं, संपादक जी ,हमारी रचना छाप दो., पर अभी तक किसी का उत्तर नहीं आया है.

कविता

बेचारी मत बनना

प्रज्ञा श्रीवास्तव

तुम बेचारी मत बनना...
जिस दिन खुद के लिए आवाज़ उठाओगी,
उस दिन बदतमीज़ कहलाओगी।
तुम्हारा नाम बदला जाएगा, तुम्हें समझदार तो नहीं,
हाँ... ज़िद्दी ज़रूर कहा जाएगा।
साहसी नहीं,
'बदतमीज़' का खिताब दिया जाएगा।
आँखों में तुम्हारा विश्वास नहीं,
उसे बेशर्मी कहकर ठुकराया जाएगा।
तुम्हारे सवाल करने पर तुम्हें संस्कार दिखाए जाएंगे।
अपनी पसंद बताने पर, तुम्हें तुम्हारा चरित्र याद दिलाया जाएगा।
'तुम लड़की हो...' कहकर चुप कराया जाएगा।
जब तुम्हारे शब्दों में 'नहीं' आएगा,
उस दिन तुम्हें बेशर्म घोषित कर दिया जाएगा।

पर तुम मेरी सुनो...
समाज उस लड़की से डरता है
जो चुप रहना छोड़ देती है।
उन्हें वो चाहिए जो सहती रहे, कुछ न कहे,
समझौते को प्रेम का नाम दे
और अपमान को संस्कार मान ले।

इसलिए कहती हूं,
अगर बोलने पर बेहया कहा जाए,
तो बोलती रहना।
अपने हक़ के लिए
बिगड़ी, बदतमीज़ कहा जाए
तो अड़ी रहना।
क्योंकि 'बदतमीज़' सुनना आसान है,
पर 'बेचारी' बनकर जीना मुश्किल।
तुम बेशर्म बनकर रह लेना,
पर बेचारी मत बनना...
क्योंकि
तुम बेचारी नहीं हो।

लघु कथाएं

पहचान

राजश्री राठी

मैं उसके पास गया,पीठ पर बायाँ हाथ रख,दाहिना हाथ आगे बढ़ा दिया.

उसकी सिसकियाँ बंद हो गईं.शर्ट की बाँहों से आँसू पोंछ मेरा हाथ पकड़ वह खड़ा हो गया और हम दोनों साथ-साथ चल पड़े.बस चलते रहे.

थोड़ी दूर जाकर वह रुक गया और मेरे सामने नतमस्तक हो,हाथ जोड़कर खड़ा हो गया.

क्या तुम मुझे जानते हो? मैंने उसकी पीठ पर थपकी देते हुए पूछा. कहीं पढ़ा था-गिरा हुआ आदमी सहारे को पहचानता है,

सहारा देने वाले को नहीं.आज महसूस कर रहा हूँ.उसने अपनी नम आँखे पोंछ,मेरा हाथ फिर थाम लिया.

मेरे बढ़ते कदम अचानक ठिठक कर रुक गए. रेलवे ब्रिज की सीढ़ियों पर घुटनों में सिर छिपाए एक युवक बैठा था.सिसकियों संग उसकी पीठ हिल जाती.पता नहीं बेचारे को क्या दुख है? कहीं ऐसा न हो कोई गलत कदम उठा ले !आवेगों और आवेश के ये क्षण!

मैं उसे नहीं जानता था पर इन क्षणों से मैं भी गुज़र चुका था.इंजन के हॉर्न की आवाज़ से तंद्रा टूटी.पूरी देह में एक कंपन सा महसूस हुआ.

सम्मान

शीला श्रीवास्तव

आज आकाश जी फूले नहीं समा रहे थे, उनका बेटा अमित आईआईटी प्रवेश परीक्षा में प्रदेश में प्रथम स्थान जो प्राप्त किया था .

आकाश जी बैंक में वरिष्ठ प्रबंधक हैं. उनकी पत्नी प्रभा घर संभालती है. प्रभा सुबह से ही घर सजाने में व्यस्त थी, आज अखबार वाले अमित के इंटरव्यू के लिए आने वाले जो थे .

मां आप भी थोड़ा तैयार हो जाओ, वे लोग आपसे भी तो सवाल पूछेंगे अमित अपनी मां के गले में स्नेह से सांसें डालते हुए बोला.

इन्हें तैयार - वैयार होने की कोई जरूरत नहीं है. एकाएक आकाश जी बीच में बोल पड़े, फिर वे प्रभा की ओर मुखातिब हुए-और हां, तुम उन लोगों के सामने आना भी मत. तुम्हें पढाई- लिखाई की बात कहाँ समझ आयेगी? आकाश जी की बात सुनकर प्रभा का सारा उत्साह ही ठंडा पड़ गया. पहली बार उसे अपने पति की बात सूल की तरह चुभी.

ऐसा नहीं था कि अनपढ़ होने का तंज उसने पहली बार अपने पति की मुंह से सुना हो . लेकिन इससे पहले कभी उनके बच्चों की परवरिश में योगदान पर ऊंगली उठाते हुए यह बात नहीं कही गई थी.

तभी दरवाजे की घंटी बजी .प्रेस वाले दरवाजे पर खड़े थे. आकाश जी ने आदर के साथ उन लोगों को अन्दर बुलाया, फिर अमित के इंटरव्यू का सिलसिला शुरू हो गया. कई सवाल पूछे जाने के बाद अचानक एक रिपोर्टर की नजर पर्दे से झांक रही महिला पर पड़ी. वह बरबस पूछ बैठा - वे शायद आपकी माताजी हैं, उन्हें तो बुलाइए.

अरे, नहीं - नहीं, वो तो हमारी रिश्तेदार हैं , इसकी माँ तो मंदिर गई हुई है. आकाश जी ने फौरन झूठ बोल दिया.

% नहीं, यह मेरी मां हैं. पापा झूठ बोल रहे हैं. दरअसल मेरी मां कम पढ़ी-लिखी है इसलिए पापा उन्हें कभी किसी से नहीं मिलवाते, पर मेरी मां मेरी प्रेरणा है. आज तक मैंने जो भी मुकाम हासिल किया है वह सिर्फ और सिर्फ अपनी मां की वजह से. अगर माँ मेरा साथ ना दी होती तो मैं कब का हार मान चुका होता . जब भी मेरी लग्न में कमी होती तब माँ ही मुझे संबल देती. मेरी माँ का विश्वास ही मुझे अत्यधिक मेहनत करने हेतु प्रेरित किया. कह कर अमित अपनी मां का हाथ पकड़कर बैठक में ले आया और अपने पापा के पास वाली कुर्सी पर बैठा दिया. प्रभा की आंखें खुशी से छलक उठी. आज उसके बेटे ने उसे बराबरी का सम्मान जो दिला दिया था .

कविता

मां की दुआ

तृप्ति भटनागर
गांधी नगर, ग्वालियर

ईश्वर का रूप नहीं देखा मैंने,
पर मां को देखा है।
मंदिर की घंटी नहीं सुनी,
पर मां की लोरी सुनी है।
उंगलियां पकड़कर चलना सिखाया, गिरा
तो खुद से पहले उठाया।
रोटी आखिरी थी घर में,
कहा 'बेटा, मेरी भूख नहीं है'।
उसके आंचल में जन्नत बसती है,
उसकी आंखों में पूरा समंदर।
दुनिया मांगे दौलत-शोहरत,
मैं मांगू बस मां का साया उम्रभर।
थक जाती है, पर कहती नहीं, टूट जाती है,
पर रोती नहीं। क्योंकि मां होना आसान नहीं,
खुद मिटकर घर बनाती है यही।
मां, तू नाराज़ हो तो डांट देना,
पर कभी खामोश न होना।
तेरी आवाज़ से ही घर में जान है,
तू है तो मैं हूं, तू है तो जहान है!

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी